



Sanvahak (संवाहक)

A Peer Reviewed, Multidisciplinary (All Subjects) & Multilingual (All Languages) Quarterly Research journal

ISSN : 3108-1347 (Online)

Vol.-1; Issue-1 (July-Sept.) 2025

Page No.- 05-07

©2025 Sanvahak

<https://sanvahak.gyanvidya.com>

Author's :

डॉ. मंजू शर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर,

श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा

महाविद्यालय, जामडोली, जयपुर.

Corresponding Author :

डॉ. मंजू शर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर,

श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा

महाविद्यालय, जामडोली, जयपुर.

भारतीय ज्ञान साहित्य एवं योग चिंतन

सारांश : भारतीय ज्ञान, साहित्य एवं समाज का आईना है, साहित्य का संशोधन एवं परिवर्धन शिक्षा द्वारा ही किया जा सकता है। शिक्षा व्यवहार परिवर्तन का माध्यम है। साहित्य के विकास की सूचनाओं, उनका विश्लेषण करने और निष्कर्ष निकालने का कार्य शिक्षा द्वारा ही किया जा सकता है। अतः शिक्षा व साहित्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। शिक्षा से साहित्य प्रभावित होता है व साहित्य से शिक्षा प्रभावित होती है। विषय के विशेषज्ञ द्वारा साहित्य में नई दृष्टि रखते हुए विभिन्न कालखंडों की प्रवृत्तियों एवं विधाओं का ऐतिहासिक विवेचन किया जाता है। साहित्य द्वारा अनेकता में एकता स्थापित कर विद्यमान मतभेदों एवं अंतर विरोधों का निराकरण तथा अपनी रूपरेखा के अनुसार यथा स्थान परिवर्तन एवं संशोधन किया जाता है।

भूमिका : भारतीय साहित्य मानव के भ्रातृत्व और ईश्वर के पितृत्व एवं विश्व धर्म की आवश्यकता में विश्वास करता है। मानव जीवन के मूल्य साहित्य द्वारा ही संरक्षित परिवर्तित एवं सृजित किए जाते हैं। मूल्य के विकास में संवेग तथा तर्कणा दोनों का महत्वपूर्ण निर्णायक योगदान होता है। साहित्य तर्कणा, के बिना संवेग नेत्रहीन व संवेग के बिना तर्कणा पंगु होती है। साहित्य मानव अनुभूति का ऐसा क्षेत्र है जिससे कोई व्यक्ति अच्युत नहीं रह सकता क्योंकि यह हमारे सामाजिक जीवन निर्वाह की पद्धति को निर्धारित करते हैं। शिक्षा एवं साहित्य अप्रिय परिस्थितियों का वर्णन एवं सुधारक के रूप में कार्य करते हैं। साहित्य मूल्य शिक्षा प्रदान करने का एक माध्यम है। इसके द्वारा समाज में हम उत्तरदायित्व का निर्धारण भी कर सकते हैं। साहित्य द्वारा सामाजिक अतःक्रिया को भी व्यक्त कर सकते हैं। साहित्य व शिक्षा द्वारा नैतिक अधिगम की प्राप्ति अपने विकास की प्रत्येक अवस्था में और सामाजिक अंतःक्रिया की प्रत्येक स्थितियों में किया जा सकता है। इसके माध्यम से नैतिक व अन्य मानव मूल्यों के विकास में मानव व्यक्तित्व के संज्ञानात्मक तथा संवेगात्मक दोनों आयाम गहन रूप से आवेशित रहते हैं। शिक्षा एवं साहित्य की किसी भी परिचर्चा में मूल्य शिक्षा अथवा

नैतिक शिक्षा सदैव एक आवश्यक विचार वस्तु प्रस्तुत करती है।

भारतीय ज्ञान साहित्य एवं संस्कृति चिंतन : संस्कृति मुख्यतः एक मूल्य सहित धारणा है जो अनिवार्य रूप से मानव जीवन के किसी मूल्य निकाय की ओर निर्देश करती है। संस्कृति में व्यक्ति के ऐसे मूल्य की कल्पना की जाती है जो आदर्श रूप में हो। जो वास्तविक जीवन के लिए प्रेरणा स्रोत बनते हैं तथा जीवन को उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए तैयार करते हैं। शिक्षा व साहित्य जीवन के कुछ विशेष मूल्य, सांस्कृतिक आदर्शों तथा सैद्धांतिक मूल्य में भेद करना भी सीखाते हैं। इस प्रकार संस्कृति का अर्थ मानव द्वारा जीवन में मूल्य का अनुप्रयोग या विनियोग है। संस्कृति में मानव की सृजनात्मक भी सम्मिलित होता है जो संस्कृति का परिवर्धन करती है। संस्कृति द्वारा राष्ट्र के वास्तविक उद्देश्यों की पूर्ति की जाती है। भारतीय ज्ञान, संस्कृति, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पर आधारित बहुत सी धारणाओं को भारतीय मूल्यों की रूपरेखा का तर्क आधार बनाती है।

शिक्षा व साहित्य, सामाजिक चेतना के अनुरूप बदलती हुई जनता की चित्तवृत्तियों का ही सृजनात्मक प्रतिफल होता है। साहित्य व समाज एक दूसरे के संपूरक होते हैं इसलिए साहित्य को समाज के हृदय की धड़कन कहा जाता है। अतः साहित्य में समाज की संवेदनाओं की अपेक्षाएं नहीं की जा सकती।

भारतीय योग चिंतन : योग विद्या का उद्भव हजारों साल प्राचीन है। योग शब्द का वर्णन वेदों, उपनिषदों, गीता तथा पुराणों में अति प्राचीन काल से आया है। श्रुति परंपरा के अनुसार भगवान शिव योग विद्या के प्रथम आदि गुरु हैं। हजारों-हजारों वर्ष पूर्व हिमालय में कांति सरोवर झील के किनारे आदि योगी ने योग का गूढ़ ज्ञान पौराणिक सप्त ऋषियों को दिया था। इन सप्त ऋषियों ने अत्यंत महत्वपूर्ण योग विद्या को एशिया, मध्य पूर्व, उत्तरी अफ्रीका एवं दक्षिण अमेरिका सहित विश्व के अलग-अलग भागों में प्रसारित किया। योग हमारा सौभाग्य है जहां पर योग की विद्या पूरी तरह अभिव्यक्त हुई। योग आध्यात्मिक अनुशासन एवं अत्यंत सूक्ष्म विज्ञान पर आधारित ज्ञान है, जो मन, शरीर, विचार कर्म,संयम एवं पूर्णता की एकात्मकता तथा मानव एवं प्रकृति के बीच सामंजस्य स्थापित करता है। यह स्वस्थ जीवन की कला एवं विज्ञान दोनों है। पाणिनी व्याकरण के अनुसार यह तीन अर्थों में प्रयुक्त होता है, समाधि, जोड़ एवं सामंजस्य। योग के अनुसार योगी अभ्यास व्यक्तिगत चेतना को सार्वभौमिक चेतना के साथ एकाकार कर देता है। आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार आधुनिक ब्रह्मांड में जो कुछ भी है, वह परमाणु का प्रकटीकरण मात्र है। जिसने योग्य में इस अस्तित्व के एक तत्व का अनुभव कर लिया है उसे योगी कहा जाता है। योगी पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त कर मुक्त अवस्था को प्राप्त करता है। इसे ही मुक्ति निर्वाण, कैवल्य या मोक्ष कहा जाता है।

महर्षि पतंजलि के अनुसार "योगश्चित्त वृत्ति निरोधः" अर्थात् मन वृत्तियों (रूप,रस,गंध, स्पर्श) को रोकना योग है अर्थात् चित्त की चंचलता का दमन ही योग है।

महर्षि अरविन्द का योग दर्शन:- महर्षि अरविंद दार्शनिक, शिक्षाविद, चिंतक एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। उन्होंने अपने विचार अति मनासवाद एवं योग पर केंद्रित किया उनका मानना था अतिमानसवाद एवं योग व्यक्ति के निर्माण का साधन है। यह व्यवस्थित अवचेतन राशि में से व्यक्ति को ऊपर उठाकर सुव्यवस्थित आत्म चेतना की ओर ले जाता है।

योग आत्म शक्ति के रूप में- प्रत्येक व्यक्ति में कुछ देवी अंश होता है और कुछ उसका अपना निजत्व होता है। प्रत्येक में पूर्णता और बल प्राप्त करने की क्षमता होती है। व्यक्ति स्वयं में निहित सर्वोत्तम को समझे एवं सर्वोत्तम को व्यक्त करने की क्षमता को जागृत करें। योग का कार्य व्यक्ति के भीतर निहित जान को प्रकाशित करना है। योग को शक्ति, संस्कार,वंश की भांति स्वीकार किया जाना चाहिए। योग दिव्य प्राण शक्ति के रूप में है, जो मन और शरीर की क्रिया के अधीन है।

योग दिव्य प्रज्ञा के रूप में:- योग वह शक्ति है जिसे हम दिव्य दृष्टि या अंतर्दृष्टि कह सकते हैं। मानव को इस

शक्ति को प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे अंतरज्ञान की प्रवृत्ति का विकास हो सके। भारतीय मनीषियों के अनुसार योग का उद्देश्य चेतना का विकास उसका संस्कार तथा रूपांतरण है जो मानव में दिव्य प्रज्ञा के रूप में प्रस्तुत एवं उजागर होती है।

योग चित्त की एकाग्रता है:- चित्त का तात्पर्य अंतकरण से हैं जो सर्वोपरि है। चित्त भूतकालीन अनुभव तथा संस्कारों का कोश है। विभिन्न विषयों को ज्ञानेंद्रियों द्वारा ग्रहण किया जाता है तब मन ज्ञान को आत्मा तक पहुंचाता है। तब अहंकार क्रोध और अमानवीय गतिविधियों को दूर करता है। जब मनुष्य अहंकार और क्रोध से दूर होता है तब उसकी चित्त में स्वतः ही एकाग्रता उत्पन्न हो जाती है। ज्ञानेंद्रियों की स्थिर अवस्था ही योग है। इंद्रियों के स्तरीकरण से व्यक्ति में शुभ संस्कारों की उत्पत्ति और अशुभ संस्कारों का नाश होने लगता है। योग उस अवस्था का नाम है जिससे समस्त व्यक्तियों में एकाग्रता आती है। योग द्वारा चित्त की समस्त अवस्था में एकाग्रता लाई जाती है। इसके लिए योग के विभिन्न साधनों हट योग, मंत्र योग, भक्ति योग, ज्ञान योग, एवं कर्म योग सभी को जागृत करना होगा।

भारतीय ज्ञान एवं योग चिंतन की विशेषताएं।

भारतीय ज्ञान एवं योग, चिंतन में प्रामाणिक ज्ञान पर विचार करते हैं।

भारतीय ज्ञान एवं योग चिंतन स्वयं प्रकाशित है।

भारतीय ज्ञान एवं योग चिंतन, चिंतन द्वारा चेतना है।

भारतीय ज्ञान एवं योग चिंतन, चेतना से स्वयं की पहचान है।

भारतीय ज्ञान एवं योग चिंतन विज्ञानमय विचार है।

भारतीय ज्ञान एवं योग एक शाश्वत और अविनाशी शांति के प्रतीक है।

भारतीय ज्ञान एवं योग चिंतन समस्त ज्ञान अपने अंदर ही समाए हुए हैं।

अतः भारतीय ज्ञान एवं योग चिंतन अभिनव प्रकाशमान है। इसके द्वारा अंतर ज्ञानात्मक अनुभव एवं विवेक से युक्त मानव का सृजन करना है। इसके समस्त विचार सत्ता के सार तत्त्व की ज्योतिर्मय शक्ति को आलोकित करने वाले हैं। भारतीय ज्ञान एवं योग अपने अंदर अनंत की एकता को ही नहीं वरन् उसकी विशालता तथा नाना विद अनेकता को भी धारण करता है।

संदर्भ :

1. योग सूत्र : 1/2
2. योग सूत्र : 1/3
3. वर्मा ए.के. (2017), तत्त्व मीमांसा एवं ज्ञान मीमांसा, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, पृष्ठ 140
4. पाण्डेय एस.एल. (2002), भारतीय दर्शन का सर्वेक्षण, सेंट्रल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद पृष्ठ 243
5. लाल आर.बी. (2014), शिक्षा का दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, पृष्ठ-192-193.
6. श्री अरविंद: 'द सीक्रेट ऑफ़ द वेदा' एस. बी.बी.एल.भाग-10, 1971.
7. श्री अरविंद: 'द लाइफ़ डिवाइन' एस.ए.बी.सी.एल.भाग 18, 19, 1970

•